RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 39 अंक 13 हल्द्वानी सम्वत् 2080 सोमवार 4 सितम्बर 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

बागेश्वर उपचुनाव का घमासान

चम्पावत उपचुनाव सा दोहराने के लक्षण दिखाई देने लगे हैं

कार्यालय प्रतिनिधि

बागेश्वर विधानसभा सीट के उपचुनाव में वह सब होते दिखाई दिया है जो चम्पावत उपचुनाव में हुआ था। विपक्ष अपने टूटते नेताओं को नहीं संभाल पाया। टूटकर भाजपा में शामिल होने वाली भीड़ को देख कहा जा सकता है कि चम्पावत उपचुनाव सा दोहराने के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। बताते चलें कि चम्पावत उपचुनाव में सीएम धामी के पक्ष में एकतरफा वोट पड़े थे और कांग्रेस सहित विपक्ष को झण्डे लगाने वाले भी नहीं मिले। विपक्ष आरोप लगाता रहा लेकिन इनकी सभा में दिग्गजों को देखने तक भीड़ नहीं जुटी। बागेश्वर में कांग्रेस नेताओं सहित विपक्ष के दमदार हैं लेकिन सत्ता पक्ष की लपेट में अच्छे-अच्छे धराशाई हुए हैं। नगर पालिका अध्यक्ष सुरेश खेतवाल अपनी पत्नी पूर्व ब्लाक प्रमुख रेखा खेतवाल और समर्थकों सहित भाजपा में शामिल हो गये। बसपा के जिलाध्यक्ष सुन्दर स्यूनेवाल अपने समर्थकों सहित भाजपाई बन बैठे। फिलहाल जनमत तो मतगणना पर स्पष्ट होगा।

सबको इन्तजार

दिग्गजों की सभा, बैठक और सम्पर्क अभियान का कितना असर हुआ है और सोशल मीडिया पर दिन-रात जारी सूचना सन्देशों ने कितना प्रभावित किया होगा, यह सब मतगणना पर स्पष्ट हो जायेगा। फिलहाल तो बागेश्वर वासियों ने चुनाव का जो नजारा देखा है, वह एकदम नया है। दिग्गजों की भरमार तो हर उत्तरायणी में सुनते रहे हैं लेकिन उपचुनाव का मेला नया अनुभव है।

सारे गणित लगे हैं

चुनाव के लिये पक्ष-विपक्ष ने अपने सारे गणित लगा दिये हैं। बेरोजगार संघ के अध्यक्ष बॉबी पंवार तक यहाँ पहुँचे और प्रेसवार्ता करना चाहते थे लेकिन पुलिस ने शान्तिभंग में उन्हें गिरफ्तार किया। इस मामले को लेकर कांग्रेस ने बड़ा मोर्चा खोला और कहा कि भाजपा अपनी हार के डर से तानाशाही पर उतर आई है। इसके अलावा भी हार-जीत के गणित अन्तिम समय तक लगते रहे हैं।

लला जसुली की यादों को संजोया जाए

कब्जे के रिकार्ड खंगाले जा रहे हैं

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

धारचूला/बागेश्वर। दानवीरांगना लला जसुली की यादों को संजोने के लिये जसुली बूढ़ी लला सोक्यानी धर्मशाला जीर्णोद्धार एवं प्रबन्धन समिति का अभियान जारी है। इसमें सबसे पहले उन स्थानों को चिन्हित किया जा रहा है जिस जगह धर्मशाला बने थे और उन पर कब्जा किया गया है। संस्था की ओर लगातार मंथन किया जा रहा है कि किस प्रकार इन प्राचीन धरोहरों को बचाया जाए। इसके लिये शासन-प्रशासन द्वारा जिन स्थानों पर कार्य किये जा रहे हैं उनकी सराहना के साथ ही आम जन से अपील की गई है कि वह इन्हें बचाने में सहयोग करें। संस्था की ओर से अशोक गर्ब्याल, गंगा सिंह पांगती, सुनील सिंह दताल, किशन सिंह बनग्याल, राम सिंह सहित सभी जागरुकता सन्देश दिये हैं। विधायक हरीश धामी ने इस अभियान में अपनी ओर से हमेशा सहयोग की बात कही है। फली सिंह दत्ताल ने इस पूरे अभियान के लिये प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वालों का आभार करते हुए कहा है कि इसके साथ ही पुराने यात्रा पथ का भी विकास होगा।

देवदार के वृक्ष हिमालय के कुछ क्षेत्रों से गायब हो सकते हैं!

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

देवदार जिसे क मीर में दिआर और हिमाचल में कैलोन कहते हैं पर्वतीय प्रदेश का एक पवि> व पूजनीय पेड़ है। इसका नाम दो शब्दों देव (देवता) व डारू (वृक्ष) से मिलकर बना है। प्राचीन संस्कृति अभिलेखों में देवादारू या देओदारू नाम के इस वृक्ष का उल्लेख मिलता है। देवदार को अंग्रेजी में ईंडियन या हिमालयन सिकार कहते हैं। इसका वानस्पतिक नाम सिड्रस देवदारा (रॉक्सबर्गी) है। सिड्रस का उद्गम ग्रीक शब्द केडरॉस से हुआ है। जिसका अर्थ है- कोनीफर अर्थात शंकु वाले पादप। यह वृक्ष बहुत ही खूबसूरत होता है। उच्च गुणवत्ता की लकड़ी के रूप में भी इसका अपना एक विशिष्ट स्थान है। इसकी लकड़ी का उपयोग मुख्यत: मन्दिरों तथा बड़े और खास घरों के निर्माण में होता आया है।

पहले राष्ट्रीय स्तर पर रेल्वे स्लीपर बनाने में इसकी जगह कंक्रीट ने ले ली है। देवदार सदा हरा रहने वाला तथा गहरी हरी पत्तियां वाला आकर्षक वृक्ष है। इसकी चमकीली तथा नुकीली पत्तियां इसकी सुन्दरता को और बढ़ा देती है। इसका शंकु के आकार का शीर्ष, वृक्ष की आयु बढ़ने के साथ-साथ गोल, चौड़ा और चपटा हो जाता है जिसमें से शाखाएं फैलती जाती हैं। कभी-कभी इसका शीर्ष तेज हवा या बर्फ गिरने से चपटा हो जाता है। जब वृक्ष पूर्णत: परिपक्व हो जाता है तो उसकी लम्बाई 40 मीटर तक हो जाती है। इस वृक्ष की छाल पतली, हरी होती है जो धीरे-धीरे गहरी भूरी होती जाती है तथा इसमें दरारें पड़ जाती हैं। इसकी पत्तियों की उम्र दो से तीन साल तक होती है। एक विख्यात वानिकी विशेषज्ञ दल ने 1914 में कुल्लू हिमाचल Çदे ा में एक चट्टान पर उगे एक वृक्ष की मोटाई 6 मीटर तक नापी जबकि इसकी ऊंचाई लगभग 52 मीटर थी। देवदार के 72 मीटर तक ऊंचे होने की जानकारी है। इसी प्रकार एक 700 वर्ष पुराने देवदार के तने की एक काट फारेस्ट रिसर्च इंस्ट्यिूट देहरादून के टिम्बर म्यूजिम में रखी हुई है। देवदार के प्राकृतिक वन सम्पूर्ण पश्चिमी हिमालय में अफगानिस्तान से लेकर उत्तराखण्ड तक अपना प्राकृतवास बना चुका है। यह आन्तरिक शुष्क तथा बाहरी आर्द्र मानसून वाले हिमालयी क्षेत्रों में उग सकता है। देवदार समुद्र तल से 1200 से 3000 मीटर तक की ऊंचाई वाले क्षेत्रों में उग सकता है। इस वृक्ष की अधिकतम वृद्धि ठण्डे प्रदेशों में समुद्र तल से लगभग 1800-2600 मीटर ऊंचाई पर पाई गई है। भारत में देवदार के वन हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर तथा उत्तरप्रदेश में पाए जाते हैं। देवदार के वन जो हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर तथ उत्तराखण्ड में फैला हुआ है।

देवदार के घने वृक्ष में मुख्यत: 100

से 1800 मिमी वर्षा वाले तथा 12 सेल्सियल (न्यूनतम) से 38 डिग्री सेल्सियस (अधिकतम) तक के तापमान वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये वृक्ष कई अन्य पादपों के साथ पाए जाते हैं। इसमें मुख्य है बनाफशा (वायोला कैनिसेन्स) झाड़ी या आईवी (हेडेरा हेलिक्स) प्रतान, रस्पबेरी (रूबस) प्रजाति, जंगली गुलाब (रोसा मोस्केटा) तथा गुच्ची (मोरकेला एस्क्यूलेन्ट) कवक। कुछ शंकु वृक्ष ब्ल्यू पाईन (पाइनस वालीचाईना) तथा स्प्रूस (पाईसिआ स्मिथियाना) भी देवदार के सहयोगी पादप के रूप में मिलते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य वृक्ष जैसे चिलगोजा (पाइनसजिरेडियाना) ओक (करकस इलिक्स) आदि भी देवदार के वनों में सहयोगी पादप के रूप में पाए जाते हैं। देवदार सामान्यत: वर्ष भर हरा-भरा रहता है परन्तु इसकी नई पत्तियां मार्च से मई तक आती हैं तथा पुरानी पत्तियां झड़ जाती हैं। देवदार के वृक्ष में नर एवं मादा पुष्प एक ही वृक्ष पर लेकिन अलग-अलग शाखों पर पाए जाते हैं। इसके नर पुष्प जून में आते हैं तथा सितम्बर-अक्टूबर तक परिपक्व होकर परागकण छोड़ देते हैं जबकि छोटे मादा पुष्प शंकु अगस्त में आते हैं तथा इनका परागण सितम्बर- अक्टूबर में होता है। ये शंकु अगले वर्ष जून-जुलाई तक पूर्ण आकार ले लेते हैं तथा इनमें पंख सहित बीज छिपे रहते हैं। देवदार के वृक्ष सूखा सहन नहीं कर सकते परन्तु पाला तथा तेज हवाओं को सह जाते हैं। देवदार के वनों की हानि आम तौर पर अत्यधिक बर्फ गिरने एवं आग लगने से होती है। जबकि जानवरों की चराई से इसके पुनर्जननक्षमता में कमी आती है। देवदार को सीधे बुआई अथवा रोपणी में तैयारी पौधों से उगाया जा सकता है। इसके अंशुओं से अक्टूबर-नवम्बर में बीज एकत्र किए जाते हैं। एक किलो में तकरीबन 7000-8000 बीज होते हैं तथा इनकी अंकुरण क्षमता 70-80 प्रतिशत होती है। इसकी रोपणी में तैयार 2.5 वर्ष से 3 वर्षीय पौधे जुलाई-अगस्त में रोपे जाते हैं। देवदार उत्तरी भारत का एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी काष्ठीय है। प्राचीनकाल से ही इसका उपयोग मन्दिरों एवं भव्य प्रासादों के निर्माण में होता रहा है। विगत कुछ दशकों से इसका इस्तेमाल रेलवे के स्लीपरों में हो रहा था परन्तु इसकी तेजी से घटती संख्या के चलते इसे रोक दिया गया है। इसकी उच्च गुणवत्ता के कारण ही यह सबसे महत्वपूर्ण लकड़ी उत्पाद है। इसकी लकड़ी में पसीना व मूत्र बढ़ाने वाले औषधीय गुण पाए जाते हैं। बुखार, बवासीर, फेफड़ों एवं मूत्रशय सम्बन्धी रोगों में देवदार प्रयुक्त होता है। हिमाचल प्रदेश के कुछ भागों में इसकी लकड़ी का पेस्ट चन्दन की तरह ललाट पर लगाया जाता है तथा ऐसी मान्यता है कि इससे सिरदर्द ठीक हो जाता है। देवदार की छाल भी औषधीय महत्व की है तथा इसका उपयोग बुखार, अपच, दस्त आदि रोगों में होता है। देवदार का औलिव-रेजिन तथा इसकी लकड़ी के विनाशात्मक संघनन से प्राप्त तेल का उपयोग अल्सर एवं त्वचा रोगों में होता है। देवदार के तेल की मांग, इत्र, साबुन तथा अन्य कई उद्योगों में है। उत्तराखण्ड के कई गाँव हैं जहाँ इस तरह के भवन है। लेकिन अब इन को बनाने वाले कारीगरों की कमी हो गयी है। लकड़ी मिलना मुश्किल हो रहा है। इसलिए अब लोग ऐसे भवन नहीं बना रहे हैं। देवदार की लकड़ी का इस्तेमाल आयुर्वेदिक औषधियों में भी होता है। इसके पत्तों में अल्प वाष्पशील तेल के साथ-साथ एस्कॉर्बिक अम्ल भी पाया जाता है। देवदार के वनों में कई तरह के

शेष पृष्ठ 3 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

पटरी में आती व्यवस्था को ध्वस्त न किया जाए

शासन द्वारा उच्चशिक्षा को पटरी में लाने का भला प्रयास किया जा रहा है लेकिन फालतू राजनीति इसे ध्वस्त करने पर तुली है। शिक्षा मंत्री डॉ.धन सिंह ने साफ शब्दों में कहा है कि सभी विश्वविद्यालयों, कालेजों में एक समय पर प्रवेश, एक समय पर परीक्षा, एक समय पर छात्र संघ चुनाव होंगे। साथ ही ड्रेस कोट, बाहरी लोगों का अनावश्यक कालेज में प्रवेश निषेध होना चाहिये। यह सब बातें कहने-सुनने में अच्छी लग रही हैं और काफी कुछ व्यवहार में होने लगा है। समर्थ पोर्टल के द्वारा संचालन किये जाने से प्रवेश प्रक्रिया में काफी लगाम लगी है। तय समय पर प्रवेश की बात होने के बावजूद छात्रों की ओर से मच रहे हंगामे को देखते हुए समय सीमा बढ़ा दी गई। समर्थ पोर्टल के पहले प्रयास में यह सब हुआ है। लेकिन उम्मीद है कि अगले सत्र से यदि यही व्यवस्था रही तो प्रवेश सम्बन्धी कार्य समय से होंगे।

इतना सब होने के बाद भी तमाम कालेजों में व्यवस्था ध्वस्त करने के लिये उजड्डपन हाबी हो रहा है। छात्र संघ चुनाव में रुचि लेने वाले बाहरी लोगों की नीयत और नज़र पर तरस आता है। कई बूढ़े हो चुके छात्र नेता नए बच्चों को बरगलाने के लिये सक्रिय हो जाते हैं। यही सब कारण हैं कि किसी बनी हुई या सुधार हो रही व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया जाता है।

प्रवेश का ही मसला ले लो, जब तय समय पर प्रवेश होने हैं तो फिर कालेजों द्वारा जारी मैरिट लिस्ट के अनुसार प्रवेश हो जाने चाहिये। तमाम कर्मी इसके लिये दिन-रात योगदान देते हैं। पढ़ने वाले और जागरुक छात्र छात्राएं समय से प्रवेश पा जाते हैं परन्तु दिक्कत तब होती है जब सूची में नाम न आने वाले, नेतागिरी की आड़ वाले, लापरवाह, लेटलतीफ आकर भिड़ने लगते हैं। यह बतानले के बावजूद भी कि अब पढ़ाई के लिये मुक्त विश्व विद्यालय सहित कई मौके हैं, ऐसे तत्व कालेज में जबरन दाखिला चाहते हैं जो सम्भव नहीं है। प्रवेश की तय समय सीमा, विषयों की तय सीटें और मैरिट सूची पर ही सबकुछ होना है। सबकुछ जानने के बाद भी कतिपय छात्र फिजूल की आदतों के कारण हंगामा करते हैं जिन्हें रोका जाना जरूरी है। बड़ी छात्र संख्या वाले कालेजों में तो हंगामा रोकने के लिये कालेज प्रशासन को और भी सख्ती करना जरूरी है। आंखिर शासन की जो मंशा है उसपर तो अमल करना ही होगा। साथ ही पद की गरिमा को भी बनाए रखना है। ऐसे में यह कतई नहीं हो सकता है कि कोई छात्र या बाहरी तत्व गुरुजनों को धमकाए या हाथ-पैर पटकते हुए रौब दिखाए।

बहुत ही साफ-सुथरी बात है कि व्यवस्था ध्वस्त करने में आतुर तत्वों द्वारा बार-बार बड़े नेताओं का नाम लेकर उन्हें भी बदनाम किया जाता है और कार्य कर रहे गुरुजनों व कर्मियों को मानसिक प्रताड़ना दी जाती है। ऐसे में यह भी होना चाहिये कि व्यवस्था संचालन में अवरोध करने वालों को तुरन्त सजा मिले। लग रहा है कि समर्थ पोर्टल व्यवस्था के भले परिणाम होंगे।

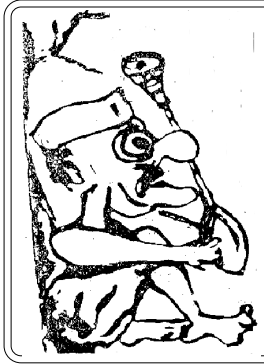

फसक

दाज्यू, दिन पर दिन हकाहाक बढ़ रही ठैरी लिस्ट और ब्लैकलिस्ट बनती रहती है बल

दाज्यू, चाँद पर चन्द्रायान-3 के पहँचने की खुशी में अभी तक मिष्ठान वितरण हो रहा है। चन्द्रायान जब चक्कर लगा रहा था हमारे ननकू ने तो उसी दिन से धूपबत्ती शुरु कर दी थी। नैना और विमला ने हरियाली तीज के झूले झुलते हुए फोटो खिंचवाई और फेसबुक पर चेप दी। दाज्यू, जमाना चेपाचेप का ठैरा। वैज्ञानिक दिन रात एक किए हैं और यहाँ झमझमाट हो रही है.....। रुद्रपुर डिपो की आय 5 लाख रुपये प्रतिदिन घट रही है बल। कह रहे हैं कि बरसात के कारण असर हुआ है। दाज्यू, हकाहाक भी तो बहुत होने लगी है। काकू दा ढाबा में दाल मखनी खाने के लिये जब गाड़ी रुकती है बिल भी अथाह आ जाने वाला हुआ।

पुरानी पेंशन बहाली के लिये आन्दोलनकारियों ने हरिद्वार सांसद रमेश पोखरियाल निशंक घर जाकर घण्टी बजाई। दाज्यू, कलयुग में कौन किसकी सुनने वाला है? अब यही सब होना है। दिन पर दिन हकाहाक बढ़ रही ठैरी। बागेश्वर उप चुनाव में भाजपा ने 40 स्टार प्रचारकों की लिस्ट जारी की तो कांग्रेस ने भी 40 की जारी कर दी। उत्तराखण्ड बेरोजगार संघ ने स्वास्थ्य विभाग पर ब्लैकलिस्टेड कम्पनी से उपकरण खरीदने का आरोप लगाया है। दाज्यू, आप जानने ही वाले हुए कि लिस्ट और ब्लैकलिस्ट बनती रहती है बल। शासन-सत्ता के हिसाब से भी लिस्ट तय होना आश्चर्य की बात नहीं है। ऋषिकेश एम्स में उपकरण घोटाले पर मुकदमा दर्ज हो चुका है और हुल्लड़ गुल्लड़ हो रही है बल। क्या गजब है दाज्यू, एक ओर उपकरणों का जोड़-जुगाड़ कर चाँद पर चन्द्रायान भेजने वाले वैज्ञानिक हैं दूसरी ओर उपकरणों के नाम पर बिल बाउचर का खेल हो रहा ठैरा। हमारे गाँव के प्रधान ने इलाके के वैज्ञानिकों की सूची बनानी शुरु कर दी है। इसमें विकास चरसिया सबसे पहले नम्बर पर है। शहर के सिद्धविनायक आटोमोबाइल्स दुकान से कुछ उपकरण मंगवाकर प्रदर्शन करने की तैयारी है। लिस्ट बन जाने तो ब्लैक लिस्ट भी बन जाएगी।

कमिश्नर रावत ने तो और ही कर रखी है बल। नैनीताल में छापेमारी में उन्हें पता चला कि रोडवेज इन्चार्ज की मिलीभगत से शौचालय को कमरा बनाया गया है। दाज्यू, कमिश्नर साहब को बताओ मिलीभगत से कैन्टीन, दुकान, सड़क, खड़न्जा, गूल, सीवर टैंक बहुत कुछ बनने वाला ठैरा। किस्मत अपनी-अपनी है कि कौन बनेगा करोड़पति। स्कूल, कालेज, मन्दिर, धर्मशाला, ट्रस्ट की सम्पत्ति का मुंह फोड़कर गर्दन निकालने लायक जगह बहुतों ने बना दी है बल। कमिश्नर सैप भी बेचारा अकेला कितना करें। सबको जागरूक होना पड़ेगा।

हल्द्वानी में पार्षद रवि जोशी ने मेयर खिलाफ एकतरफा मोर्चा खोल रखा है। जुवा पार्षद ठैरा तो धांकड़ करके बोलना भी हुआ। विधायक सुमित हृदयेश भी मेयर के बयानों पर पलटवार कर रहे हैं। दाज्यू, राजनीति में सब लगा धन्धा ठैरा। रुद्रपुर में अन्तराज्यीय नकली नोट गिरोह का सरगना पकड़ा गया। विजिलेंस की टीम ने उधमसिंह नगर के जिला पंचायत अधिकारी को भी एक लाख रुपये रिश्वत लेते हुए दबोच डाला। लालकुआ वन विकास निगम में लकड़ी नीलामी घोटाले मामले में रिपोर्ट दर्ज होने के बाद डिपो अधिकारी समेत तीन कर्मचारियों को निलम्बित कर दिया गया। दाज्यू, निलम्बन बिलम्बन लम्बन सब लगा ठैरा। इससे भी क्या हो जाएगा? हल्द्वानी जेल में हब मशीन से रोटियां सेकने की तैयारी है। इस जेल में बन्द कैदी हर रोज बीस जहार रोटी खा जाते हैं बल।

दाज्यू, सरकारी एजेन्सियों को बिना रवन्न खनन की आपूर्ति करने वाले ठेकेदारों से 315 करोड़ रुपये का जुर्माना वसूलने के लिये क्या किया जाए? इसके लिये सरकार ने उपसमिति बनाने का फैसला कर रखा है बल। दाज्यू, अब समझ आने लगा है कि दुनिया कितनी फैली हुई है। अवैध खनन करने वालों का बस चले तो चाँद और मंगल ग्रह तक भी खोद डालें। दाज्यू, फिलहाल तो इनकी लिस्ट और ब्लैकलिस्ट बना ली जाए। हम नन्दादेवी मेले के लिये अल्मोड़ा जा रहे हैं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

लोक संस्कृति : गमरा पूजन, सातू-आठू, हिरन-चीतल, बेरीनाग का मेला

उत्तराखण्ड इन लोक लोकपर्वों से घिरा हुआ है। इन आयोजनों में लोक संस्कृति की धूम है हालांकि इन्हें जबरदस्ती महोत्सव नाम देते हुए सोशल मीडिया में अपलोड करने वाले भी जुटे हैं।

गंगोलीहाट। क्षेत्र में सातू आठू की धूम मची। जिन ग्रामों में इनका आयोजन होता है, वहाँ लोग जमकर थिरके। झोड़ा चाँचरी की उमंग के साथ बच्चे-बूढ़े दिन रात अभी तक थिरक रहे हैं। राईआंगर, बेरीनाग में भी खूब आयोजन किये गये। राईआंगर के सैम मन्दिर में होने वाले मेले में बड़ी संख्या में लोग पहुँचे। इस दौरान देवडांगर हयात सहि भण्डारी, जीवन सिंह रावत ने भक्तों को आशीर्वाद दिया।

बेरीनाग। इलाके का प्रसिद्ध नाग मेला धूमधाम से मनाया गया। बेरीनाग मन्दिर कमेटी द्वारा इसके लिये पहले ही तैयारी कर ली गई थी। दिन और रात्रि के मेले में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। मेले के लिये बाजार भी सजे और दूर दराज से लोक कलाकार स्वयंस्फूर्त थिरकते हुए बेरीनाग पहुँचे।

पिथौरागढ़। सीमान्त जनपद में गमरा मेले का भव्य आयोजन हुआ। रामलीला मैदान पिथौरागढ़ में महिलाओं ने अठवाली पूजा के साथ गौरा और महेश्वर से क्षेत्र की सुख-शान्ति की कामना की।

चम्पावत। क्षेत्र में गौरा पूजन के लिये जगह-जगह महिलाएं जुटी। विरुड़ा पंचमी के अवसर पर विशेष पूजन के साथ ही देवालयों में भजन किये गये।

लोहाघाट। लोहाघाट और बाराकोट में भव्य रूप से लोकोत्सव मनाया गया। नेपाल सीमा से लगे जाख, जिन्डी, बसकुनी, लुगड़ा आदि ग्रामों में भी गौरा पूजन के साथ देव डांगरों ने भक्तों ने आशीर्वाद दिया।

अस्कोट। सतगड़ और अस्कोट क्षेत्र में लोकपर्व पर हिरन-चीतल का खेल देखने लोगों की भीड़ जुटी। महाकाली

आठू सातू व हिरन-चीतल के लिये पहचान रखने वाले क्षेत्र में आयोजन किया गया। क्षेत्र के लोक कलाकारों ने मुख्यालय पहुँचकर भी अपनी प्रस्तुति दी। इसी प्रकार डीडीहाट क्षेत्र में ठुलखेल का भव्य आयोजन किया गया। डीडीहाट के ग्रामों में इसका खूब रिवाज है। कनालीछीना में भव्य आयोजन हुए हैं। थल मुवानी के ग्रामों में आठू सातू मनाई गई।

खटीमा। शहर व आस पास ग्रामीण क्षेत्रों में आठू साते का त्यौहार धूमधाम से मनाया गया। बनबसा, टनकपुर में भी खासे आयोजन हुए। आमबाग, सेलानीगोठ, चकरपुर तमाम जगह श्रद्धालुओं में उत्साह देखा गया।

पन्तनगर। पन्तनगर, नगला, जवाहरनगर, मोटा हल्दू, हल्दूचौड़ में चांचरी खेल हुए। शान्तिपुरी में नन्दा सुनन्दा की भव्य झांकी निकालते हुए झोड़ा-चांचरी नृत्यगीत हुए।

नन्दा देवी मेला

नैनीताल। 20 से 27 सितम्बर तक आयोजित होने वाले नन्दादेवी मेले की तैयारी शुरु हो चुकी है। इसके बाद 15 अक्टूबर से रामलीला होगी।

तालीम शुरु

गंगोलीहाट। महाकाली रामलीला कमेटी द्वारा रामलीला की तैयारी जारी है। कमेटी जुड़े पदाधिकारी और पात्र नियमित रूप से तालीम में भाग ले रहे हैं।

बग्वाल मेला जारी

पार्टी देवीधुरा का बग्वाल मेला अभी जारी है। रक्षाबन्धन को बग्वाल की बहार रही। इसके अलावा सांस्कृतिक कार्यक्रमों सहित अनुष्ठान चल रहे हैं। 27 अगस्त को सांसद अजय टम्टा द्वारा इस मेले का उद्घाटन किया गया था, जो 15 दिन तक होगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

संस्मरण

जोहार घाटी का पत्थरक्षिका देव (ढुङ वाऽल द्याप्त)

जगदीश सिंह वृजवाल

पत्थरक्षिका देवी-देवता की मान्यताएं अब लगभग सम्पूर्ण पहाड़ से समाप्ति की स्थिति में है। कुमाऊं में इसे बुडा देवी व दारमा, ब्यास घाटी में कठपतिया देवी व जोहार घाटी में ढुं चरौनिक वा्ल द्याप्त के नाम से जाना जाता रहा है।

इस देवी-देवता के विषय में कहा जाता है कि इस देवता का किसी प्रकार का कोई मन्दिर ढांचा नहीं होता है पूजा -पाठ का कोई विधि-विधान भी नहीं है निर्जन स्थान पर पाषाण खण्ड के चढ़ावे से ही देबी-देवता, गण तृप्त हो जाते थे।

पौराणिक अनुश्रुति के अनुसार इस देवी या देवता की स्थापना शाकल्य मुनि द्वारा की गई। याज्ञवल्क्य ऋषि द्वारा भी पूजा-अर्चना की गई थी मन्दिर की मान्यता है कि पाषाण खण्ड के चढ़ावे से देवता खुश हो जाता था किन्तु विषयवस्तु की जानकारी आज तक जोहार के लोगों के संज्ञान में कम ही है। लेखक के द्वारा कई लोगों से पूछने पर कोई विशेष जानकारी नहीं मिली थी।

पत्थरक्षिका देव के पूजा-अर्चना का मुख्य उद्देश्य जब व्यक्ति निर्जन स्थल से गुजरता है आगे दुर्गम मार्ग, कठीन चढ़ाई चढ़नी पड़ती है या विरान जंगल के रास्ते से होकर गुजरना पड़ता है तो हर किसी को जीवन खतरे का एहसास होने लगता है तब इस देवी-देवता का स्मरण कर जंगली जानवर, नदी, पहाड़ आदि से अपनी सुरक्षा की गुहार लगाई जाती थी, और मन्दिर में पाषाण खण्ड चढ़ा कर कुछ अतिरिक्त ऊर्जा प्राप्त करने का जरिया भी था।

मन्दिर एकदम सड़क के दाईं या बाईं ओर स्थापित होता था तथा आस-पास के झाड़ियों में रंगीन कपड़े के चिथरे बंधे होते थे। खुले निर्जन स्थान पर पाषाण खण्ड के बहुत ढेर लगे रहते थे।

मुनस्यारी से जोहार घाटी मार्ग पर इस तरह के मन्दिर जगह-जगह स्थापित था जो अब समाप्ति की और है हो चुका है। जिसका उल्लेख अपने लोगों के विचारो के अनुसार करते हैं कि जोहार घाटी के लोग इस देवता की मान्यताओं से कितना इतफाक रखते थे?

मुनस्यारी से उत्तर दिशा की और बढ़ते जोहार घाटी में प्रवास या तिब्बत व्यापार हेतु घाटी में प्रवेश करते तो उन्हें कठीन ऊबर-खाबर दुर्गम रास्ते, कठिन दर्रे कम बायुदाब क्षेत्र की चोटीयो को पार करना कितना जान लेवा होता था तब जगह-जगह में इस देवी-देवता,गण के आसरा व आस्था पर अवश्य सुरक्षा का भरोसा रहता होगा. भले आधुनिक समय में विषय का कोई माने नहीं है।

मुनस्यारी से जब आगे जोहार घाटी की यात्रा पर जाने वाले राहगीर दुम्मर, सुरिंघाट पार करने के बाद छोटा-सा कस्बा, पडाव जमीघाट पहुँचता है तो यहाँ से आगे जगह-जगह अन्तराल पर पत्थरक्षिका देवता का मन्दिर स्थापित है निर्जन (खुला स्थान) मन्दिर के दर्शन होने लगते हैं।

जमीघाट के पार्श्व भाग जिमीयागार के पुल के पास गोरी नदी के संगम से 25 मी ऊपर सड़क किनारे पत्थरों के ढ़ेर तथा आस-पास के झाड़ियों में रंगीन कपड़ों के चितेरे बंधे मिल जाता हैं.जहाँ पर राहगीर पाषाण खण्ड के चढ़ावा के बाद उसके आस-पास के देबी देवताओं का स्मरण करता है नदी किनारे के बा-मसान, प्रेतात्मा का नाम स्मरण करते सुरक्षा का गुहार लगाते थे।

यहाँ से आगे बढ़ने पर पड़ाव लीलम से आगे रारागरी क्षेत्र जहाँ के किस्से कहानियां जोहार के इतिहास में खुब भरा पड़ा है सरकैरि भेल (सरकार द्वारा बनाया मार्ग) के पास भी पत्थरक्षिका देव की स्थापना की गई है कुछ दूर आगे जाकर बोगडियार पहुँचते समय भी स्थापित मन्दिर मिल जायेगा बोगडियार से आगे छिरकानी में भी मन्दिर दिखाई देती है उससे आगे मर्तोली के नीचे ढसू कमर में भी स्थापित है आगे बिल्जू गाँव के करीब रागस ढु (राक्षस पत्थर) के पास पत्थरक्षिका देव मन्दिर स्थापित है तब जोहार घाटी का अन्तिम गाँव मिलम पहुँचा जाता है।

जनश्रुति के अनुसार मिलम से आगे तिब्बत व्यापार मार्ग में ऊंटा धूरा के चोटी पर भी पत्थरक्षिका देवता मन्दिर की स्थापना की गई है जगह-जगह मन्दिर स्थापना से सिद्ध है जाता है कि यह सुरक्षा का देव-देबी, बाण-मसाण, प्रेतात्मा जो भी है शक्ति स्वरूपा अवश्य था।

मुनस्यारी क्षेत्र में एक और मन्दिर गोरीछाल मार्ग गोरी व भदेली गार के संगम में भदेली गाँव के नीचे स्थापित था मोटरमार्ग बनने के कारण मन्दिर का अस्तित्व अब मिट चुका है पूर्व में पैदल मार्ग के चलते इस मन्दिर में पाषाण खण्ड चढ़ाकर आगे बढ़ते थे। प्रथाएं जिसकी याद और उल्लेख आवश्यक है जिससे आने वाले पीढ़ी को अतीत के विषय का ज्ञान अवश्य रहें, पुरातन समाज के कई महत्वपूर्ण विषय लिपिबद्ध न होने से किंवर्दतियां तक ही सीमित रह गयी। बस, चिन्तन इस विषय का है। यादों के उस संस्कार को भी बचाया जाए।

देवदार के.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

वन्य प्राणी जैसे बाघ, भालू, हिरण, मौनाल, ट्रैगोपान, कॉनी ीजेंट इत्यादि मिलते हैं। सुन्दर देवदार पेड़ों के नीचे विचरते ये वन्य प्राणी पर्यावरण के सौन्दर्य में चार चाँद लगाते हैं। एक खासियत यह भी है कि इनके नए पौधे अनुकूल जलवायु में वयस्क पेड़ों के नीचे स्वत: उग आते हैं। अलबत्ता कठिन खाली स्थानों को भरने के लिए प्रान्तीय वन विभाग इसकी पौध पालिथीन की थैलियों में उगाते हैं जिन्हें नर्सरी पौधे कहा जाता है। ये नर्सरी पौधे जब दो साल के हो जाते हैं तो खाली क्षेत्रें में रोप दिए जाते हैं।

पर्यावरण को सौहार्द बनाने तथा देश की समृद्धि हेतु वनों को बढ़ाने के लिए ये पौधे रियायती दर पर उपलब्ध कराए जाते हैं। देवदार के अनेक उपयोगों को ध्यान में रखते हुए हमें इसके वनों के संरक्षण में ज्यादा से ज्यादा योगदान देना चाहिए और खाली क्षेत्रों में देवदार के पौधे ज्यादा से ज्यादा लगाने चाहिए। इस कामना में प्रकृति व मानव के सह अस्तित्व और प्रकृति संरक्षण की दिशा में उन्मुख एक समृ) विचारधारा भी साफ तौर पर परिलक्षित होती दिखायी देती है। आखिर प्रकृति के इसी ऋतु परिवर्तन एवं पेड़-पौधों, जीव-जन्तु, धरती, आकाश से मिलकर बने पर्यावरण से ही तो सम्पूर्ण जगत में व्याप्त मानव व अन्य प्राणियों का जीवन चक्र निर्भर है देश में 50 लाख पेड़ लगाकर मशहूर होने वाले वृक्षमानव विश्वेश्वर दत्त सकलानी का 96 साल की उम्र में निधन हो गया। उनको राजकीय सम्मान के साथ ऋषिकेश के श्मशान घाट में मुखाग्नि दी गयी। उन्होंने 50 लाख से अधिक पेड़ लगाकर अपना पूरा जीवन प्रकृति को समर्पित कर दिया था। छह-सात दशक पहले यह पूरा इलाका वृक्ष विहीन था। धीरे-धीरे उन्होंने बांज, बुरांश, सेमल, भीमल और देवदार के पौधे लगाना शुरू किए और इसके बाद पुजार गांव में बांज, बुरांश का मिश्रित सघन जंगल खड़ा हो गया। ये जंगल आज भी उनके परिश्रम की कहानी को बयां कर रहे हैं। देवदारों में आस्था होने का लोगों के पास जो भी तर्क हो, लेकिन देवदार में श्रद्धा होने की वजह से लोग इनका संरक्षण करेंगे। देवदार के उपयोगों एवं इसकी लकड़ी की बढ़ती मांग के चलते इसके वर्तमान वनों के संरक्षण एवं नए वनों के विकास की अत्यन्त आवश्यकता है इसके वनों को आग एवं कर्क के अलावा करीब 60 प्रकार के कीड़े भी हानि पहुँचाते हैं। आज के युग की जरूरत है कि इस प्रजाति के वनों को पूर्णतरू सुरक्षित बनाया जाए तथा इसके वनों की तेजी से वृद्धि की जाए ताकि इस वृक्ष की रक्षा व संवर्धन हो सके। अगर देवदार के पेड़ों की संख्या कम हुई तो टिम्बर के कारोबार पर असर पड़ेगा। ये कॉमर्शियल पेड़ हैं, जो लकड़ी के घर वगैरह बनाने से लेकर फर्नीचर के काम में आते हैं। ऐसे में वहाँ पर आर्थिक समस्याएं हो सकती हैं। इसके अलावा देवदार के पेड़ हिमालय रीजन की बायोडायवर्सिटी को बनाए रखने में भी अहम रोल प्ले करते हैं ऐसे में इनकी संख्या कम होने से बायोडायवर्सिटी पर प्रभाव पड़ेगा।

ज्योतिष की बातें - 142

4 सितम्बर 2023 को अभी तक वक्री चल रहा शुक्र कर्क राशि में मार्गी हो जाएगा। शुक्र अपने कारक विषयों सम्बन्धित फल सभी राशियों को यथावत रूप से प्रदान करेगा।

4 सितम्बर 2023 को गुरु मेष राशि में वक्री हो जाएगा अत: गुरु अपने कारक विषयों में अगले 118 दिनों तक सभी राशियों को शुभाशुभ प्रबल रूप से प्रदान करेगा अर्थात् जिन राशियों के लिए गुरु शुभ था उनके लिए अधिक शुभ और जिनके लिए गुरु अशुभ था उनके लिए अधिक अशुभ फल प्रदान करेगा।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी- भाद्रपद कृष्ण पक्ष की निशीथव्यापिनी अष्टमी तिथि को रोहिणी नक्षत्र में भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था। तदनुसार बुधवार 6 सितम्बर 2023 को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व उल्लास पूर्वक मनाया जाएगा। इस वर्ष जन्माष्टमी के दिन रोहिणी नक्षत्र का संयोग होने के कारण श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व की श्रीकृष्ण जयन्ती संज्ञा होगी। जन्माष्टमी को रोहिणी का संयोग होने से इस पर्व का पुण्य अधिक बढ़ जाता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 33

राष्ट्रीय पशु

आजकल पूरे देश में इस बात को लेकर बहुत चर्चा है कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए, गोभक्तों की ऐसी माँग है। बहुत से साधु-सन्तों, सामाजिक संगठनों, धार्मिक संगठनों सभी की इस तरह की माँग है कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए। अब विचार करने की बात है कि राष्ट्रीय स्तर पर यदि ऐसी घोषणा कर दी जाए, किताबों में भी लिख दिया जाए, जगह-जगह बड़े-बड़े बैनर पोस्टर लगा दिए जाएँ कि 'गाय भारत का राष्ट्रीय पशु है' तो क्या गोहत्या बन्द हो जाएगी, गोमांस का विदेशों में निर्यात बन्द हो जाएगा?

ऐसा नहीं होगा। क्योंकि गोहत्या बन्द तभी होगी जब मनुष्य स्वयं ही गाय की हत्या करना बन्द करेगा। कोई भी कार्य सुनने, लिखने, पढ़ने, चिल्लाने से बन्द नहीं होता है बल्कि बन्द करने से ही बन्द होता है। पुन: गाय को सम्पूर्ण हिन्दू समाज माता के रूप में सम्मान करता है। यदि गाय को एक 'पशु' घोषित किया जाएगा तो गोभक्तों की भावना पर कुठाराघात होगा और देवसमान पूजनीय गोमाता का भयंकर अपमान होगा।

इसी तरह का विचार भारत को 'हिन्दूराष्ट्र' घोषित करना, गीता को 'राष्ट्रीय ग्रन्थ' घोषित करना आदि आदि बातों पर किया जा सकता है। ये मेरे मौलिक विचार हैं, इन पर सभी का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

-सरल

श्रद्धांजलि

अपने पहाड़ से बेहद लगाव था एल.एस.डसीला को

हल्द्वानी। उ0 प्र0 और उत्तराखण्ड राज्य में व्यापार कर अधिकारी रहे पीसीएस अधिकारी पिघलता हिमालय के वरिष्ठ सहयोगी 79 वर्षीय लक्ष्मण सिंह डसीला का आकस्मिक निधन अपूरणीय क्षति है। सरल, सहज स्वभाव के डसीला जी की गणना बेहद ईमानदार अधिकारियों में थी। पिछले कुछ समय से डसीला जी अस्वस्थ्य थे और 22 अगस्त 2023 को उन्होंने अन्तिम सांस ली।

मूलरूप से गंगोलहाट क्षेत्र में सेराघाट के डसीला जी को अपने पहाड़ से बेहद लगाव था और वह अपने बचपन के मित्रों से मिलने-जुलने के अलावा अपने बीते हर दिनों को याद करते हुए युवाओं को पहाड़ से जुड़ने की अपील करते थे। दिवंगत पूर्व पीसीएम अधिकारी लक्ष्मण सिंह डसीला अविभाजित उ.प्र. में भी व्यापार कर विभाग में कई महत्वपूर्ण जिलों और मण्डलों में सेवा में रहे। उत्तराखण्ड राज्य बनने के वस्तु एवं लेखाकार विभाग (जीएसटी) में कार्य करते हुए सहायक आयुक्त पद से सेवानिवृत्त हुए थे। सेवानिवृत्त होने के बाद वे सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय थे। विवेकानन्द विहार, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी में उन्होंने अपना आशियाना बनाया लेकिन उनकी चिन्ता हमेशा पहाड़ की पगडंडियों, नौले, खेती की परम्परागत तकनीकी, कुटीर उद्योगों के लिये थे। उनके निधन पर व्यापार कर विभाग के उनके साथी व सहयोगियों ने शोक सम्वेदनाएं प्रकट की हैं। हल्द्वानी सहित गणाई सेराघाट, गंगोली क्षेत्र भी उन्हें स्मरण करते हुए श्रद्धांजलि दी गई। स्व.एल.एस.डसीला अपने पीछे पत्नी श्रीमती नन्दी डसीला, पुत्र महिमन सिंह, बहू आशा, पोते अर्जन डसीला, तीन पुत्रियों सहित भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। पिघलता हिमालय परिवार अपने साथी स्व.डसीला जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

शिलालेख की लिपि के अनुवाद को भेजा

प्रसिद्ध जागेश्वर धाम और बदरीनाथ के प्राचीन शिलालेखों की लिपि के अनुवाद हेतु भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने एपिग्राफी शाखा लखनऊ को पत्र भेजा है। शिलालेखों में आखिर क्या लिखा गया है, उन्हें हिन्दी व अंग्रेजी में बताने के लिये यह तैयारी है ताकि शिलालेखों के रहस्य को श्रद्धालु जान सकें।

उक्रांद का अधिवेशन गैरसैंण में होगा

उत्तराखण्ड क्रान्तिदल का अधिवेशन 17 सितम्बर को गैरसैंण में होगा। इस 21वें द्विवार्षिक महाधिवेशन के लिये अधिसूचना जारी होते ही केन्द्रीय अध्यक्ष काशी सिंह ऐरी ने बताया कि महाधिवेशन में दल के केन्द्रीय अध्यक्ष का चुनाव होगा। चुनाव के लिये केन्द्रीय महामंत्री प्रताप कुंवर चुनाव अधिकारी एवं केन्द्रीय संगठन मंत्री समीर मुंडेपी सह चुनाव अधिकारी बनाए गये हैं।

पन्त मार्केट के सामने पार्क बने

किच्छा। प्रान्तीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल ने क्षेत्रीय विधायक तिलकराज बेहड़ को ज्ञापन सौंपकर नगर के मुख्य बाजार पन्त मार्केट के सामने स्थित खाली भूमि पर पार्क निर्माण कर सौन्दर्यीकरण की मांग की है। साथ ही शहर में सीसी टीवी कैमरे लगवाने व मुख्य सड़क से शास्त्री मार्केट नैनीताल बैंक गली के सम्पर्क मार्ग को ठीक करवाने को ज्ञापन सौंपा।

नजूल भूमि किराए पर देने का विरोध

नैनीताल। नगर पालिका में सूखाताल सहित शहर की नजूल भूमि पर अवैध रूप से काबिज लोगों को अतिक्रमण न हटाते हुए नजूल भूमि व सरकारी घरों से 500 रुपया प्रति वसूले जाने के फैसले का नगर निकाय कर्मचारी समासंघ ने विरोध किया है। संगठन ने चेतावनी दी है कि यदि नगर पालिका हित और कर्मचारी हितों को लेकर पालिका ने फैसला नहीं किया तो हाईकोर्ट में याचिका दायर करेंगे।

बाजपुर में भूमि बचाओ आन्दोलन

बाजपुर। तहसील परिसर में 20 गाँव की 5838 एकड़ भूमि के भूमिदरी अधिकारों की मांग को लेकर आन्दोलन जारी है। आन्दोलन के समर्थन में बड़े किसान नेताओं सहित जन प्रतिनिधि मैदान में उतर चुके हैं।

भारतीय किसान यूनियन के मण्डल अध्यक्ष विक्की रंधावा व रणजीत सिंह सोनू सहित तमाम छोटे-बड़े नेता धरना प्रदर्शन में जुटे हैं। गाजीपुर बार्डर पर सक्रिय भूमिका निभाने वाले बाबा मोहन सिंह ने प्रदर्शन स्थल पर पहुंचकर कहा कि यह आन्दोलन बाजपुर के लोगों के लिये जीवन-मरण का सवाल है। सरकार इस ओर अनदेखी करना छोड़ जनता को संरक्षण दे।

भवाली-अल्मोड़ा राजमार्ग पर नज़र खैरना बाजार से हटाए अतिक्रमण

नैनीताल। भवाली-अल्मोड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग पर सबकी नज़र है, यहाँ चर्चित खैरना बाजार से लोगों ने स्वयं ही अतिक्रमण हटा लिये। कोर्ट के आदेश व प्रशासन की सख्ती के बाद चारों ओर सड़क के किनारे अतिक्रमण हटाने का अभियान चल पड़ा है। अतिक्रमण हटाने की आड़ में किसी का उत्पीड़न न हो इसके लिये भी मांग की गई है।

छड़ा से खैरना तक प्रधान कन्नू गोस्वामी के नेतृत्व में व्यापारियों ने उप जिलाधिकारी से भेंट कर अतिक्रमण हटाओ अभियान में सहयोग की बात कही। इसके अलावा प्रान्तीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल ने कहा है कि सड़क के किनारे अतिक्रमण हटाओ अभियान से कहीं ऐसी अति न हो की दो जून की रोटी को लगे लोग परेशान हो उठें। बेतालघाट के व्यापारियों ने तो विधायक सरिता आर्य को ज्ञापन सौंपकर अतिक्रमण के नाम पर उनकी भूमि को गलत तरह से चिन्हित करने का आरोप लगया है। कहा है कि अतिक्रमण के नाम पर अधिक भूमि नापी जा रही है।

धरमघर-बासुकीनाग सड़क शीघ्र बने

धरमघर। वर्षों बीत जाने के बाद भी धरमघ-बासुकीनाग सड़क न बनने से गुस्साए क्षेत्रवासियों ने चेतावनी दी है कि यदि अब उनकी मांग पूरी नहीं हुई तो उग्र आन्दोलन किया जायेगा।

सड़क निर्माण की मांग को लेकर क्षेत्रवासी लोकनिर्माण विभाग कार्यालय पहुँचे और ज्ञापन सौंपा।

सड़क निर्माण की मांग को लेकर पहुँचे लोगों ने कहा कि धरमघर-बासुकी नाग सड़क को वर्ष 2016 में स्वीकृति मिली थी, जिसका शिलान्यास तत्कालीन मुख्यमंत्री हरीश रावत द्वारा किया गया लेकिन आज तक यह सड़क नहीं बन पाई है। बार-बार कहने के बावजूद क्षेत्रवासियों को टाल दिया जाता है। यदि यह सड़क बन जाए तो ग्रामीणों को काफी सुविधा मिल पायेगी। इस सड़क के बन जाने से कोटगाड़ी भगवती मन्दिर जाने के लिये मात्र ग्यारह किलोमीटर का सफर तय करना होगा। वर्तमान में 25 किमी का सफर तय कर कोटगाड़ी जाना होता है। ज्ञापन देने वालों में ग्राम प्रधान नागिला गाँव मंजू देव, राजेन्द्र सिंह कार्की, राजेन्द्र सिंह गनघरिया, मनोहर सिंह पंचपाल, यमुना देवी, पुष्पा देवी, तुलसी देवी, रेखा देवी, ममता, पावर्ती मौजूद थे।

बुलडोजर से हट रहे हैं अतिक्रमण

लोहाघाट। कोर्ट के निर्देश पर राष्ट्रीय राजमार्ग किनारे अतिक्रमण हटने का कार्य ताबड़तोड़ चल रहा है। प्रशासन ने अतिक्रमण हटाने के लिये बुलडोजर तैनात कर रखे हैं। एनएच किनारे हुए अतिक्रमणों को पहले ही चिन्हित कर दिया गया था और नोटिस थमा दिये गये थे। इसके बाद भी कई जगह अतिक्रमण बने हुए थे, इन्हें ध्वस्त किया गया है। इस कार्यवाही के तहत बन्तोला में तीन, बापरू में एक, बारकोट में एक पक्के मकान को तोड़ा गया। स्वांला में कई फड़ खोखों को ध्वस्त कर दिया गया। प्रशासन ने टनकपुर के ककराली गेट से लेकर घाट तक एनएच से सड़क किनारे बने कच्चे पक्के 104 अतिक्रमण चिन्हित किये थे। अभियान के दायरे में आ रहे कब्जों को हटाने के साथ ही प्रशासन ने चेतावनी दी है कि फिर से कोई गलती न करे।

श्यामलाताल झील के लिये स्वीकृति

टनकपुर। श्यामलाताल क्षेत्र को टूरिज्म के रूप में विकसित किए जाने के लिए श्यामलाताल झील का लेक फ्रन्ट डेवलपमेंट का विकास कार्य कार्य के लिये प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति प्राप्त हो गई है।

जिलाधिकारी नवनीन पाण्डे यह जानकारी देते हुए बताया कि 13 जिले 13 डेस्टिनेशन योजना के अन्तर्गत जनपद चम्पावत के श्यामलाताल क्षेत्र को एक टूरिज्म के शहर के रूप में विकसित किये जाने के लिये श्यामलाताल झील का लेक फ्रंट डेवलपमेंट के विकास कार्य के लिए वित्तीय वर्ष 2023-24 में कार्यदायी संस्था उत्तराखण्ड पेयजल संसाधन विकास एवं निर्माण निगम लोहाघाट के 490.94 लाख (चार करोड़ 90 लाख 94 हजार) के प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति प्राप्त हुई है। श्यामलाताल झील के चारों ओर पथ वे का विकास, टफिन टॉप के लिए ट्रैक रूट का विकास क्षेत्र में अवस्थित तीनों झीलों श्यमलाताल, अथर बंडा, रुद्र बंडा को जोड़ते हुए लेक ट्रेल का विकास, कैफेटेरिया का निर्माण होगा। बताते चलें कि श्यमलाताल क्षेत्र बहुत ही खूबसूरत स्थानों में गिना जाता है।

परिक्रमा

चम्पावत में बनेगा एडवेंचर पार्क

चम्पावत। पर्यटन विकास विभाग की ओर से जिला मुख्यालय के गैड़ी रोड में गोल्फ ग्राउण्ड के पास एडवेंचर पार्क बनाया जायेगा। इसके लिये राजस्व विभाग ने 50.75 नाली भूमि पर्यटन विभाग को हस्तान्तरित कर दी है। उल्लेखनीय है कि सीएम धामी की घोषणा में इस योजना को त्वरित करने के निर्देश हैं।

जौलजीवी में सीवर लाइन की मांग

जौलजीवी। सामाजिक कार्यकर्ता शकुन्तला दत्ताल ने देहरादून में पेयजल सचिव अरविन्द हयांकी से भेंट कर जौलजीवी में सीवर लाइन की मांग की। कहा कि वर्तमन में सीवर लाइन न होने से ज्यादातर सीवर को काली और गोरी नदी में डालते हैं, जिससे नदियां दूषित हो रही हैं। काली-गोरी नदी के पवित्र संगम तट पर नवम्बर में अन्तर्राष्ट्रीय मेला किया जाता है। इसलिये सीवर लाइन का होना बेहद जरूरी है।

अतिक्रमण : सल्ट में विरोध प्रदर्शन

अल्मोड़ा। हाईवे से अतिक्रमण हटाने के विरोध में सल्ट क्षेत्र में जबर्दस्त विरोध प्रदर्शन हुआ है। विकासखण्ड मुख्यालय में गुस्साए व्यापारी और क्षेत्रवासियों ने कहा कि जिस सड़क के लिये उन्होंने अपनी भूमि दी है, उसी पर अतिक्रमण के नाम पर दुकानों को तोड़ा जा रहा है। हाईवे पर स्थित डोटियाल, झिमार, पैसिया, नौकुचिया, कालीगाँव, जालीखाल, मौलेखाल, शशिखाल, नौपटुवा, हिनोला से लोग प्रदर्शन के लिये पहुँचे थे।

क्रशर निर्माण न होने देने का ऐलान

खैरना/गरमपानी। शहीद बलवन्त सिंह भुजान-बर्धी मोटर मार्ग पर रतौड़ा (दाडिमा) क्षेत्र में स्टोन क्रशर निर्माण की सुगबुगाहट का ग्रामीणों ने विरोध किया है। क्षेत्रवासियों ने ऐलान किया है कि क्षेत्र को बचाने के लिये किसी भी प्रकार का क्रशर निर्माण न होने दिया जायेगा। बेतालघाट ब्लाक के रतौड़ा क्षेत्र में कई दिनों से क्रशर की सुगबुगाहट है।

---------शाबास----------

द्वारसों गाँव की बेटी कल्पना ने सागर की गहराईयों को नापा

बागेश्वर। जिले के द्वासरों गाँव की बेटी कल्पना मेहरा ने हिन्द महासागर की गहराईयों को नापा और तिरंगा फहरा कर मान बढ़ाया। सैन्य परिवार से जुड़ी कल्पना के तिपा कैप्टन हरीश सिंह मेहरा और माता हेमा मेहरा हैं। मालदीप के निजी द्वीप फिहाल्होली में बतौर स्कूल ट्रैनर तैनात कल्पना ने पहले पन्द्रह अगस्त को भी तिरंगे के साथ समुद्र की गहराईयों को नापा था।

पहाड़ की खूबसूरती पर दिखाती फिल्म चक्रव्यूह

हल्द्वानी। कुमाउंनी और गढ़वाली भाषा में फिल्म बनाने के लिए पर्वतीय लोग आगे आ रहे हैं। जोधा फिल्म के बैनर तले बनी प्रदेशिक फिल्म चक्रव्यूह कई स्थानों पर रिलीज हुई। फिल्म के निर्माता संजय जोशी और सुधीर धर ने पत्रकारों को बताया कि फिल्म की शूटिंग चम्पावत की वादियों में कई गई है।

कूना गाँव के बेटे रोहित चन्द्रयान अभियान पर

गंगोलीहाट। गणाईगंगोली के कूना गाँव निवासी रोहित चन्द्रयान के सठन लैंडिंग अभियान पर होने से क्षेत्र में खुशी है। भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान केन्द्र इसरो की तरफ से भेजा गया चन्द्रयान 3 चन्द्रमा के साउथ पोल पर सफलतापूर्वक अपना कार्य करने से दुनियाभर में खुशी है। चन्द्रयाल-3 की उपलब्धि में उत्तराखण्ड का भी योगदान रहा है। गणाई गंगोली के कूना निवासी रोहित उपाध्याय पुत्र धीरेन्द्र उपाध्याय ने इस मिशन में शामिल होकर देश व प्रदेश का नाम रोशन किया है। इनके दादा स्व.रघुबर दत्त उपाध्याय संस्कृत के प्रवक्ता थे। इस अवसर पर दून विश्वविद्यालय के डॉ. हरीश अण्डोला, राजकीय इण्टर कालेज कुराली के प्रधानाचार्य कलसीस अंडोला, एनडी अन्डोला, शिक्षक हरीश चन्द्र अंडोला, बीडी अंडोला सहित गणाई कूना ने हर्ष व्यक्त करते हुए बधाई व शुभकामनाएं दी हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

एम.बी.पी.जी.कालेज हल्द्वानी में उबाल

यह सब क्या है? क्या बिल मनमर्जी के बन जाते हैं?

कर्मचारियों ने बनाया संगठन, शिक्षक भी लड़ा रहे हैं दांव-पेच

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड के बड़ी छात्र संख्या वाले कालेजों की गिनती में एक हल्द्वानी का मोतीराम बाबूराम राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय फिर से उबाल खा रहा है। राजनीति का अखाड़ बन चुके इस कालेज को संभालने-संवारने के लिये बहुत ही सीधे सरल प्राचार्यों की लम्बी सूची दिखाई देती है लेकिन इस कालेज में लगे घुन को आज तक नहीं हटाया जा सका है। दरअसल विभिन्न मदों में जमा धनराशि पर नज़र गढ़ाए लोगों ने एमबी कालेज को अपना कारखाना मान लिया है। हमेशा से चर्चा रही है कि यही सब कारण है कि कई लोग लगातार एमबी कालेज में नौकरी करना पसन्द करते हैं। यह सारे हालात उन शिक्षक-कर्मियों को मुंह चिढ़ा रहे हैं जो बेहद ईमानदारी से अपना कार्य करते हैं।

बड़े महाविद्यालयों की गिनती में रहे एमबी कालेज में होने वाले विभिन्न समारोहों में किस प्रकार का खर्च होता है और होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं से लेकर ओपन यूनिवर्सिटी की परीक्षा के लिये कितनी ताबड़तोड़ होती है वह सब सवाल खड़े करती है। बहुत सीधी सी बात है अध्यापक को पढ़ाना है और कर्मचारी को उसके हिस्से का कार्य करना है। फिर ऐसे में बन्दरबांट की बात कहाँ से आ गई? लेकिन यही सब होने लगा है। एक-दूसरे के काम में हस्तक्षेप करने वाले और स्वयंभू महन्त बनने की कोशिश करने वाले एक बार फिर से महाविद्यालय की गरिमा को कलंकित करना चाह रहे हैं।

पिछले दो माह से कालेज में जिस प्रकार की घमासान मची हुई है उसे जानकार आम जनता थू-थू करेगी। आँखिर मोटी पगार लेकर गाल फुलाने वाले यह सब क्या कर रहे हैं? बिगड़े हालातों

को सुधारने के लिये किसी भी अधिकारी को अतिरिक्त परेशान होना पड़ता है। एमबीपीजी दिखने में बड़ा है और छात्र संख्या भरमार है लेकिन यहाँ जितने भी प्राचार्य रहे हैं, उन्होंने कितनी परेशानी झेली है वह बता सकते हैं। छात्रों की दमदम और स्टाफ की खनखन.....सबकुछ प्राचार्य ने झेलनी होती है। यही सब वर्तमान में भी हो रहा है। सरल व्यक्तित्व के प्राचार्य प्रो.एन.एस.बनकोटी बहुत ही संयम से कालेज को चला रहे हैं लेकिन दमदम और खनखन उन्हें भी निश्चित रूप से परेशान कर रही होगी।

बात ताजा हालातों की करें तो बताया जाता है कि कालेज में बिजली के तीन पोल लगने से नई कहानी शुरु हो गई। इन पोलों का आदेश किसने दिया, कौन कमेटी थी, किसका टेण्डर था, यह बात अपनी जगह है। इसके बिल को लेकर चर्चा होने लगी। खूब खुसर-फुसर होने लगी और पता किये जाने लगा कि एक पोल कितने का आता है जबकि बिल तो लम्बा-चौड़ा है। इसी बीच एक समारोह हुआ जिसमें बिलों को लेकर भी सोशल मीडिया में बात-बहस हुई। बताया गया कि 24 हजार रुपये से अधिक की मिठाई काजू-कतली खाई गई है। दस हजार रुपये का तेल जनरेटर में लग चुका है। इसी प्रकार के फूल, मंच अन्य बिलों का झाला बताया गया। इन सारे बिलों और आयोजनों की पृष्ठभूमि में जाएं तो पता चलता है कि इस बड़े महाविद्यालय में काम करना और करवाना बहुत कठिन है। दबाव बनाकर या बहला कर काम करवाने वाले मनमर्जी करते हैं। छात्र नेताओं का अपना तर्क होता है। ऐसे में कौन बिल बनाता है, कौन बिल लाता है, कौन बिल लगाता है, वास्तव में होता क्या है? यह सब बड़ी जाँच का विषय है।

हल्द्वानी के इस कालेज को संभालने-संवारने के लिये पहल होनी चाहिये अन्यथा रुपये-पैसे की बंदरबांट और अपने कद-पद का रौब दिखाकर समय काटने वाले इसे बर्बादी की ओर ले जाएंगे। शिक्षा के इस मन्दिर में फालतू की राजनीति का विराम जरूरी है। आँखिर मोतीराम-बाबूराम की आत्मा जिस माटी में घुली हो उसे दीमक की तरह चाटने वालों के हवाले कैसे किया जा सकता है? इस दिशा में भद्र जनों, शासन, प्रशासन ने कदम उठाने चाहिये।

ओपन में पत्नी की ड्यूटी जिन्दाबाद

टनकपुर। महाविद्यालयों में ओपन यूनिवर्सिटी की ड्यूटी करने के लिये लोभ-लालच स्वाभाविक है क्योंकि परीक्षा ड्यूटी में जितना मिलता है उससे तीन-चार गुना राशि आसानी से मिल जाने का लोभ कर्मचारी से लेकर प्रोफेसर तक को होता है। ललचाने के इस खेल में मुख्य परीक्षा से मुंह मोड़कर ओपन में पैर जमाए रखने वालों की खासी चर्चा है। ऐसे में ओपन का चार्ज लेने के लिये भी हबड़-तबड़ मचती है।

राजकीय महाविद्यालय टनकपुर में तो गजब ही होता रहा है। बताया जा रहा है कि चार्ज संभालने वालों ने जिस तरह अपनी मनमर्जी की वह जग हंसाई है। बताया जाता है कि ओपन का प्रभार देख रहे व्यक्ति द्वारा अपनी ही पत्नी की ड्यूटी लगाकर जिन्दाबाद कर दिया। प्रभारी ने तर्क दिया कि स्टाफ ड्यूटी नहीं करना चाहता है। बताया जाता है कि ओपन के प्रभार संभाल रहे व्यक्ति ने उसके निर्देशन में शोध के लिये प्रवेश लेने वालों को भी ड्यूटी में लगा दिया जबकि कालेज के लोग कमरे की ड्यूटी कर रहे थे। आश्चर्य की बता है कि प्रवेश लेने वाले शोध छात्र/छात्रा को उड़नदस्ते में रखा दिया जाए और कालेज के नियमित स्टाफ को कक्ष की ड्यूटी में। अन्दर ही अन्दर सुलग रहे स्टाफ ने नवागन्तुक प्राचार्य से इस बात की शिकायत की। बताया जा रहा है कि प्राचार्य ने सख्त निर्देश दिये हैं कि किसी प्रकार की गड़बड़ न हो और शोध के लिये प्रारम्भिक चरण की पढ़ाई के लिये आ रहे विद्यार्थियों को इस प्रकार के काम में न लगाया जाए।

खटीमा कालेज की धमाचौकड़ी

खटीमा। राजकीय महाविद्यालय की धमाचौकड़ी का चर्चा चारों ओर है। हमेशा से गुटबाजी और दबाव की राजनीति की भेट चढ़ चुके खटीमा कालेज में इन दिनों हड़कम्प मचा हुआ है। घोटाले का आरोप लगाने वालों ने सोशल मीडिया पर कई प्रकार के कागजों को घुमाया। छात्र नेताओं की शिकायत पर मुख्यमंत्री पुष्कर धामी गम्भीर हो गये और उनके निर्देश पर आयुक्त दीपक रावत ने जाँच के आदेश दे डाले। खटीमा कालेज में वह सब देखने को मिल रहा है जो कभी नहीं हुआ। आरोपों से घिरे कालेज में कई कमरे सील कर दिये गये। आठ प्रवक्ताओं ने कमिश्नर के कार्यालय जाकर अपनी सफाई दी। इसके बाद कालेज के सील कमरे से उपजिलाधिकारी ने सम्बन्धित पक्षों की उपस्थिति में खोला और दस्तावेजों को जाँच के लिये कब्जे में ले लिया। इस प्रक्रिया की वीडियोग्राफी भी की गई। खटीमा कालेज में क्रीड़ा समेत अन्य मदों में घपले की शिकायत हुई है। बताते चलें कि खटीमा कालेज में छात्र राजनीति हाबी रही है और शिक्षकों की गुटबाजी ने इसे बहुत ही नाजुक स्थिति में पहुँचा दिया है। कालेज में जब-जब प्राचार्यगण चार्ज लेने आए हैं उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ा है। यहाँ माहौल सुधार के लिये सख्त कदम उठाने जरूरी हैं।

छात्र नेताओं के दंगल में सम्वेदनशील बना एमबी कालेज

पठन-पाठन में योगदान दें, कहने-सुनने में अपने भविष्य को बर्बाद न करें छात्र

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड की बड़ी छात्र संख्या वाले एमबीपीजी कालेज में छात्र संघ चुनाव से पहले छात्र गुटों के बीच लड़ाई-भिड़ाई की परम्परा बढ़ती जा रही है। इस बार भी दो छात्र गुटों में जमकर लात-घूसे चल गये। पुलिस के हस्तक्षेप के बाद इन्हें तितर-बितर किया गया। हंगामेबाजी को रोकने के लिये कालेज प्रशासन ने बिना प्रवेश पत्र के परिसर में प्रवेश पर रोक लगाई है। इन सबके बावजूद दिनभर खाली और कई प्रकार के तत्व कालेज व आसपास मडराते रहते हैं। इन्हें मौका मिलते ही कालेज में घुसना अच्छा लगता है। बड़ा कालेज है, बड़ा स्टाफ है, बड़ा फण्ड है, बड़ी चकाचौंध है.....ऐसे में अपने को बड़ा दिखाने वाले अराजक भी घुसना चाहते हैं। कालेज नेताओं को भी अपने इस प्रकार के बाहरी तत्वों को नहीं ले जाना चाहिये। छात्र नेताओं के दंगल के कारण ही यह कालेज सम्वेदनशील बना हुआ है। बताया जा रहा है कि इसके अलावा छात्रों का इस्तेमाल अपने लिये करने वाले उन्हें गुमराह करते हैं जबकि छात्र-छात्राओं को अपने भविष्य बनाने पर पूरा ध्यान देना चाहिये। किसी अन्य मसले या स्टाफ के किसी विवाद पर नहीं जुड़ना चाहिये।

बड़ी छात्र-छात्रा संख्या वाले इस कालेज में छात्र-छात्राएं समझने भी लगे हैं कि कितनी कक्षाएं होती हैं, कौन प्राध्यापक कितना पढ़ाते हैं, कौन कितना समर्पित होकर कार्य कर रहा है और कौन कानाफूसी करता है। बहुत ही साफ सी बात है कि जो छात्र हित, संस्था हित, अपने कार्य के लिये समर्पित होगा उसकी प्रशंसा अपने आप होने लगेगी। इसलिये छात्र-छात्राओं को कहने सुनने की जरूरत नहीं है। वह कहने-सुनने में अपने भविष्य को बर्बाद न करें। पढ़ने वालों के लिये बहुत अवसर हैं। कालेज का मुख्यशास्ता बोर्ड बेहतर कार्य कर रहा है।

रुद्रपुर, बाजपुर, काशीपुर में सक्रिय हैं छात्र नेता

छात्रसंघ चुनाव को लेकर सभी कालेजों में छात्र नेता जुटे हुए हैं लेकिन तराई के रुद्रपुर, बाजपुर, काशीपुर कालेजों के छात्र नेता ज्यादा ही सक्रिय दिखाई दे रहे हैं। बताया जाता है कि खूब खवाई पिवाई अपने साथियों की होने लगी है। बड़े शहरों के इन कालेजों में बाजारवाद का प्रभाव रहा है और बाहरी नेता और पुराने छात्र नेताओं के रुचि लेने के कारण प्रदर्शन भी बढ़ता जा रहा है। ऐसे में कालेज प्रशासन की ओर से भी अतिरिक्त तैयारी की जा रही है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नन्दादेवी मेला/आठू-सातू की शुभकामनाएं-

गिरीश सिंह वृजवाल

'खुशदीप सदन', सुरभि कलोनी
मल्ली बमोरी, हल्द्वानी

हिमालय संगीत शोध समिति

जे.के.पुरम्, सेक्टर डी
छोटी मुखानी
हल्द्वानी

काशीपुर में भड़क चुका है पर्वतीय समाज

बार एसोसिएशन के अध्यक्ष का लाइसेंस निरस्त करने की मांग

काशीपुर। बार एसोसिएशन के अध्यक्ष द्वारा पर्वतीय समाज को लेकर की गई टिप्पणी से पर्वतीय समाज भड़क चुका है। काशीपुर में लगातार प्रदर्शन हो रहे हैं अन्य स्थानों से भी टिप्पणी करने वाले के खिलाफ रोष प्रकट किया गया है।

काशीपुर में पर्वतीय समाज ने एक बैठक कर अध्यक्ष के खिलाफ बार काउंसिल में जाकर उनका लाइसेंस निरस्त कराने का निर्णय लिया। साथ ही उन्हें सार्वजनिक रूप से माफी मांगने को कहा है अन्यथा महापंचायत कर आन्दोलन का ऐलान है।

कुण्डेश्वरी रोड स्थित एक होटल में पर्वतीय समाज के लोगों ने बैठक की जिसमें काशीपुर के अलावा आसपास से बड़ी संख्या में लोग पहुंचे। वक्ताओं ने बार अध्यक्ष द्वारा सार्वजनिक रूप से माफी मांगे जाने की मांग की। कहा कि अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण पद पर होने के बाद भी उनके द्वारा पद की गरिमा का ध्यान नहीं रखा गया और पर्वतीय समाज के खिलाफ अभद्र टिप्पणी की गई। जिसे किसी भी दशा में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। वक्ताओं ने कहा कि इस प्रकरण पर पुलिस द्वारा भी कार्रवाई करने में देरी की गई है। इस पर चार्ज सीट लगाई जाए और सुनवाई काशीपुर कोर्ट से अन्य न्यायालय में स्थानान्तरित की जानी चाहिये।

उल्लेखनीय है कि बीते आठ अगस्त को बार एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय चौधरी ने पर्वतीय समाज को लेकर फोन में टिप्पणी की। जिसका ऑडियो खूब वायरल हुआ और लोगों में गुस्सा बढ़ता गया। तब से लगातार जगह-जगह प्रदर्शन हुए हैं। पूरे प्रकरण पर उनके द्वारा माफी न मागे जाने से आक्रोश और ज्यादा हुआ है।

हल्द्वानी में किसानों का मंथन

रेरा की आड़ में परेशान न करें, आन्दोलन झेलना पड़ेगा

हल्द्वानी। रियल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी (रेरा) को लेकर किसान सुलगे हुए हैं। उनका कहना है कि रेरा की आड़ में परेशान न करें अन्यथा आन्दोलन झेलना पड़ेगा। इस मसले को लेकर हल्द्वानी, गौलापार, हल्दूचौड़ा, कालाढूंगी तमाम जगह से किसानों ने प्रदर्शन भी कर दिया है और देहरादून जाकर मुख्यमंत्री को भी किसानों की समस्याओं से अवगत कराया है। 'रेरा' को लेकर भाजपा के नेता भी किसानों के साथ आ गये हैं हालांकि पार्टी अनुशासन के कारण कई खुलकर बयान नहीं दे रहे हैं।

देहरादून में रेरा को लेकर सीएम की ओर से बुलाई गई बैठक को किसान नेताओं ने पार्टी विशेष की बैठक बताते हुए कहा कि रेरा की आड़ में प्राधिकरण की ओर से थोपे गये बेतुके कानून लादे जा रहे हैं। राज्य आन्दोलनकारी ललित जोशी ने कहा कि बैठक में न किसी किसान नेता को बुलाया गया है और न ही उन्हें सूचना दी गई। जब तब इस प्रकरण में ठोस निर्णय नहीं लिया जाता है आन्दोलन जारी रहेगा। महापंचायत कर आन्दोलन को व्यापक किया जायेगा।

देहरादून में सीएम से मिलने गये प्रतिनिधिमण्डल ने नैनीताल में रेरा से किसानों को आ रही समस्याओं से अवगत कराया। सीएम ने अधिकारियों को जिला अधिकारी से मामले की रिपोर्ट लेकर पूरा परीक्षण कराने का निर्देश दिया है। प्रतिनिधिमण्डल में मेयर डॉ.जोगेन्द्र रौतेला विकास भगत, प्रताप बिष्ट थे।

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल, भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स
बच्चीनगर- 1, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते- जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)